प्रातः क्लास 2-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह किसने कहा ? हम सो आत्मा ने। हम शरीर ने नहीं कहा। हम आत्मा ने कहा। मुझ आत्मा का स्वधर्म है शान्त। तुम बच्चे जानते हो हम कहां के रहने वाले हैं। यहां क्यों आये हैं। यहां आये ही हैं पार्ट बजाने। अभी 84 का चक्र लगाकर पूरा किया। बाप ने समझाया है बच्चे, हे आत्माओं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। हम आत्मा ही एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है, फिर तीसरा लेती हैं। तुमने 84वार शरीर धारण कर पार्ट बजाया है। वही फिर कल्प2 लेंगे। जो 84 जन्म लिये हैं वही 84 जन्म लेंगे। जो कुछ 84 जन्मों में पार्ट बजाया, वह बजाते 2 आकर अन्त हुआ है। बाप को तुम बच्चों ने बुलाया है, निमंत्रण दिया है बाबा आकर हमको सतोप्रधान, पतित से पावन बनाओ। और सृष्टिचक्र कैसे फिरता है यह समझाओ। बस। और कोई बात किसने कही हो तो बताओ! इसी बात के लिए गायन भी है ऋषि-मुनि आद कोई भी रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते। अभी तुम बच्चों ने बाप को भी जाना है, सृष्टिचक्र को भी जाना है। बाप का फर्ज है अपना परिचय देना और 84 के चक्र का नालेज देना। बाप को कहा भी जाता है पतित-पावन। ज्ञान का सागर। तुम बच्चे भी जानते हो बाबा का यहां क्या पार्ट है। बाप ही आकर यह सभी ना० देते हैं। वह तो कहते हैं हम रचयिता और रचना को नहीं जानते। गोया नास्तिक हैं। वही नालेज ड्रामा प्लेन-अनुसार बाप का ही फर्ज है जो आकर बच्चों को समझाते हैं। रचयिता को जानना तो सेकण्ड का काम है। पर डिटेल में समझाने से समय लग जाता है। सेकण्ड में ज्ञान मिल जाये तो तुम याद की यात्रा में कच्चे हो जाओ। इसलिए पढ़ाई वृद्धि को पाई है। बाप बैठ डिटेल में समझाते हैं। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। याद की यात्रा में रहना भी बहुत जरूरी है। क्योंकि पावन बनने से ही तुम जा सकेंगे। तुमने बुलाया ही है कि आओ आकर हमको पतित से पावन बनाओ। और सृष्टि चक्र का राज समझाओ। यह बातें दुनिया में कोई भी नहीं जानते। तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। वापस अपने घर जाना है तो पवित्र जरूर बनना है। अपवित्र आत्माएं उड़ न सके। इस समय माया ने सभी का पर काट दिया है। अपवित्र होने कारण तुम जा नहीं सकते हो। इसलिए ही बाप को बुलाया है। अभी बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। यह तो बिल्कुल पक्का2 कर दो। हम आत्मा हैं यह बात घड़ी2 भूल जाते हो। अपने को आत्मा निश्चय करने से बाप जरूर याद आवेंगा। हम आत्मा हैं। शरीर नहीं। आत्मा समझने से फिर शरीर का भान टूट जावेंगा। पहले2 बाप रियलाईज कराते हैं तुम आत्मा हो। तुम आत्मा अविनाशी हो। यह शरीर रूपी आरगन्स विनाशी है। आत्मा ही अभी पतित बनी है। सीना में खाद पड़ गई है। बात तो साफ है ना। बाकी शारीरिक कोई बिमारी आद होती है तो जाओ उस सर्जन के पास। बाबा क्या करेगा। कोई में अपवित्र और सोल आती है तो जाओ उन सोल्स निकालने वालों पास। मेरा कोई यह धंधा नहीं है। हमको तो सिर्फ पतित से पावन बनाना है। बाकी आयुध सोल आद का तो चलता आता है। इन से हमारा कोई कनेक्शन नहीं। कोई बिमार पड़े, समझे बाबा भगवान है हमको दवाई देंगे तो छूट जाऊंगा। नहीं। बाबा कहते हमारा यह काम नहीं है। भल ड्रामा अनुसार कब कुछ न कुछ बता भी देता हूं खुश करने लिए। परन्तु मेरा कोई यह धंधा नहीं है। मुझे बुलाया ही है आकर पतित से पावन बनाओ। तो अभी कहता हूं मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन जावेंगे। और कोई काम के लिए मैं आया नहीं हूं। बिमारी आद के लिए तो डाक्टर आद बैठे हैं। भूल निकालने वाले भी हैं। मैं तो हूं नई बात बताने वाला। मुझे बुलाया ही है कि आकर पावन बनाओ तो हम शान्तिधाम सुखधाम जावें। इन दुःखों से छूट जावें। बाकी यह प्रवेशता आद होती है तो कर्म-भोग। कोई को दुःख दिया है तो बदली लेने लिए आते हैं। इसमें बाबा का कनेक्शन नहीं। यह पुरानी रसम चली आ रही है। ऐसे नहीं बाबा सर्वशक्तिवान है वह क्या नहीं कर सकता है। बिमारी को भी खत्म कर सकता है। नहीं। यह ख्यालात कब कोई न रखे। तुमने जिसके काम के लिए बुलाया है वही मैं जानता हूं। ऐसे नहीं शिव बाबा हमारी बिमारी को आप ठीक करो। शिव बाबा यह बातें सुनते ही नहीं। यह तो तुम्हारा ही कर्म-भोग है। यह बाबा का काम नहीं। कोई2 आश रखते हैं। बाबा भगवान भगवान क्या नहीं कर सकता। बाबा कहते हैं

मैं और कुछ भी नहीं कर सकता हूं। मैं सिर्फ तुमको पावन बनाकर सृष्टि चक्र का राज़ सुनाकर, चक्रवर्तीराजा बनने का रास्ता बताता हूं। बाकी और सभी बातें भूल जाओ। यह बाबा का काम नहीं। बाप तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। मुझे जो जितना याद करते हैं उनको मैं भी याद करता हूं। जितना जो मेरी सर्विस करते हैं उतना ही मैं उनकी सर्विस करता हूं। प्यार करता हूं। अन्यान्य बच्चे सर्विस कर के आते हैं उनको मैं आफरीन देता हूं बच्चा। बहुतों का कल्याण करते हो। यह ही आफरीन है। शाबास प्यार है। बाप फिर भी समझाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। अपने को आत्मा भूलने से ही फिर बाप को भूल जाते हो। देहअभिमान आ जाता है। पहले2 तो यह निश्चय करो हम आत्मा हैं। वह हमारा बाप है। बाप सर्व का सदगति दाता है। पहले2 तुम अपने आत्मा को भूलते हो तब ही माया के तूफान आते हैं। देही अभिमानी बनने में ही मेहनत है। तुम्हारा एम हो है विश्व का मालिक बनने। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने। ल0नारा सदैव तो इकट्ठे नहीं रहते हैं। सदैव किसका राज्य नहीं चलता। लिमिट है 3। जन्मों की। 2। पीढ़ी। यह गैरन्टी है। यह तो जानते हो वहां आयु बड़ी हो जाती है क्योंकि पवित्र रहते हैं। हैल्थ-वैल्थ हैपी सभी है। निरोगी काया भी है। सर्वगुण सम्पन्न सोलह कला सम्पूर्ण भी है। यहभी जानते हो यह चक्र ही 5000 वर्ष का है। इसमें तुम 84 जन्म लेते हो। यह तो पक्का याद है ना। हर 5000 वर्ष बाद हमउपरसे नीचे, नीचे से उपर जाते हैं। हरेक जन्म बाद जरो2 कम होते जाते हैं। शरीर भी ऐसे ही बूढ़ा बनता है। इनको कहा जाता है जड़-जड़ीभूत अवस्था। सतयुग में यह अक्षर काम में नहीं आते। यहां ही समझाया जाता है। यहां बूढ़े होते हैं तो एकदम बेहाल हो जाते हैं। समझते हैं कहां शरीर छूटे ते अच्छा है। यह नहीं समझते हमारा ही कर्म-भोग है। उसका तो हिसाब भोगना ही है। सतयुग में तुम्हारा कर्म कब विकर्म होता नहीं। बाप कर्म-विकर्म-अकर्म की गति समझाते हैं। वहां वहां तुम जो कर्म करते हो वह अकर्म हो होता है। विकर्म बनता ही नहीं। क्योंकि वहां रावण राज्य नहीं। वहां तो तुम विकर्माजीत हो। फिर विकर्मी बनते हो। सम्वत है ना विकर्माजीत और विक्रम विक्रम की। विकर्मी बनते हो द्वापर से। विक्रम फिर विक्रमी सम्वत कहा जाता है। भारतवासियों को यह भी पता नहीं है। कब से शुरु हुआ क्या हुआ। धक्का लगा दिया। टपना आद जो बनाते हैं यह सभी है भक्ति-मार्ग। यहां की बात नहीं है। वहां ज्योतिषी समझ आद होते ही नहीं। रावण द्वारा तुमको आधा कल्प सराप मिलता है। यहां वर मिलता है। रावण सराप देती है राम वर देते हैं। यह खेल बना हुआ है। राम कोई त्रेता वाला नहीं। बाप कहते हैं गीता झूठी तो भगवद महाभारत भी झूठी हो जाती। अभी तुमको कहते हैं शास्त्र पढ़ते हो, शास्त्रों को नहीं मानते हो। बाबा ने समझाया, बोलो हमने जितनी शास्त्र पढ़ी है और किसी ने नहीं पढ़ी होंगी। परन्तु अभी जब कि समझ है ज्ञान से ही सदगति होती है। बाकी भक्ति मार्ग के शास्त्र आद से दुर्गति होती है। तो अभी हम सदगति तरफ जाते हैं। बाप कहते हैं मन्मनाभव। देह के सभी धर्म छोड़ो। इस समय है देह के बन्धन। वहां होता है सम्बन्ध। तो अभी यह सभी छोड़ अपने को आत्मा समझो। मैं कुमारी हूं, स्त्री हूं। नहीं। मैं आत्मा हूं यह पक्का निश्चय करना है। तब ही बाप की स्थाई याद रहेगी। हम आत्माओं का बाप आया हुआ है। यह सबक पक्का कर लो। इस पर विचार सागर मंथन करो। तुमको ज्ञानामृत मिलता है। विचार करना यही सागर मंथन है। जिससे यह अमृत निकलता है। बाबा कहते हैं यह रत्न निकलते हैं। बाप ने समझाया है बाप रूप भी है तो बसंत भी है। ज्ञान बरसा बरसाते हैं। बाकी कोई ईन्द्र है नहीं। ज्ञान सागर होने कारण ज्ञान की वर्षा तुम पर करते हैं। यह है ज्ञान की पढ़ाई। बाकी कहते हैं यह वेद-शास्त्र आद जो भी हैं उनको मैं जानता नहीं हूं। यह सभी भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। ज्ञान का शास्त्र होता ही नहीं। तुमको पढ़ाता हूं फिर यह सभी विनाश हो जाते हैं। और धर्म स्थापन करने वालों का शास्त्र रहता है। वह भी कोई खुद नहीं लिखते हैं। एक दो होते हैं वह क्या पढ़ेंगे। जब बहुत हो जाये तब बात। यहां पढ़ने वाले बहुत हो जाते हैं। यह भी समझते हो इतना टाईम नहीं रहेगा। इतने को पढ़ने का। पढ़ाई तो बहुत ही सहज है ना। तुम सभी को यही पैगाम देते रहो।

बापू कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। यह तो बहुत ह. सहज है। यह है पुरानी दुनिया। यहां देखो मक्खियां आद भी कितना तंग करती है। सतयुग में यह होंगे नहीं। किचड़ा करने वाले, तंग करने वाली कोई चीज़ नहीं होंगे। बड़े आदमियों पास मक्खी-मच्छड़ आद नहीं होते। बड़ी सफाई रहती है। यह है ही डर्टी वर्ल्ड। परन्तु अपन को कोई समझते थोड़े ही हैं। इसलिए जंगली जनावर से भी बदतर कहा जाता है। जैसे वह रेस होते हैं घोड़ों आद की। यह फिर हैं आत्माओं की रेस। बाप से तुम योग लगाते हो। पहले नम्बर जो जाकर टच करेंगे उनको ही ईनाम मिलेगा। बाप को अच्छी रीत याद करना है और दैवीगुण धारण करनी है। प्रजा भी बनानी है। सभी तो नहीं आकर राजा बनेंगे। पहले 2 तो जरूर एक राजा ही होगा। भल कहा जाता है आठ बादशाही पहले होनी चाहिए। परन्तु उसमें भी पहले 2ल0ना0 का राज्य गाया जाता है। और किसी का नाम नहीं है। द्वारिकाधीश कृष्ण को ही कहते हैं। बाप एक तो राजाई भी एक। आगे चल कर तुम सा0 करेंगे। एक ही राजाई है ना या पहले से ही आठ राजाई होती है नम्बरवार। आगे चल कर तुमको मालूम पड़ेगा। बाप कहते हैं अभी ड्रामा में नहीं है व जो तुमको बताऊं इन एडवांस। धुका लगावेंगे। बाकी एक्सुरेट तो जब ड्रामा में होगा तो इमर्ज होगा। ऐसी2 डिफीकल्ट सवाल कोई पूछे तो बोलो अभी हम पढ़ रहे हैं। पहले तो बाप कहते हैं याद करो तो पावन बनेंगे। जो जितना पावन बनेंगे वह पहले स्वर्ग भाला में आवेंगे। यह भी जानते हो बाप ज्ञान का सागर है। उनमें ज्ञान है जो कहते रहते हैं। आजकल तुमको नई गुह्य बातें सुनाता हूं। यह तो कहते रहेंगे। मुख्य बात है ही एक। आर्य-समाजी हो या कोई भी हो बोलो बाप यह कहते हैं। पहले2 बाप का परिचय न देने से तुम और बातों में बैठ तिक2 करते हो। बाप को परमपिता कहा जाता है तो जरूर कर्तव्य भी होगा ना। जास्ती तिक2 करने से मुंझ जाते हैं। पहले तो बाप का परिचय। तुम बाप को सर्वव्यापी समझते हो, गाली देते हो। हम तो उनको बहुत प्यार करते हैं। हमको बेहद का वरसा बाप देते हैं। बहुत तिक2 करने की दरकार नहीं। बोलो हम कुछ भी नहीं करते हैं। सिर्फ एक अलफ को समझना है। प्रदर्शनी में भी पहले2 बाप का परिचय। हम आत्मा हैं, वह हमारा बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है। हेविनको स्वर्ग की बादशाही कहा जाता है। अभी वह आदी-सनातन-देवी-देवता धर्म नहीं है। प्रायः लोप हो गया है। तो हिन्दु नाम रख दिया है। क्योंकि पतित बने हैं। बहुत ही प्यार से समझाना है। बाप आते ही हैं इस तन में। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। काहे का? नई दुनिया की। हम ब्रह्मा के बच्चे होयोगबल से स्थापना करते हैं। इस में लड़ाई आद की कुछ भी बात नहीं। अपने ही तन-मन-धन से राजधानी स्थापन करते हैं। तुम तो स्वर्ग में जाते ही नहीं हो। हम स्वर्ग में जावेंगे तो बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। बाप कहते हैं तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुये। अभी फिर तुमको पहले नम्बर जाना है। बच्चियां कहती है हम कुछ भी पढ़े-लिखे नहीं हैं। बाप कहते हैं कुछ भी न पढ़े हो यह तो बहुत ही अच्छा है। तुम एक अलफ को जानने से सभी कुछ जान जावेंगे। यह पढ़ाई ही अलग है। इन से तुम अल्प काल लिए शरीर निर्वाह आद करते हो। इस से तो तुमको नई दुनिया के मालिक बनते हो। बाप से बेहद का वरसा मिलता है। राजाई तो है। फिर आपस में भी नम्बरवार गर्तवे हैं। हम अपना ऊंच पद कैसे प्राप्त करें। इसके लिए पुरुषार्थ करना है। हम भी नर से ना0 नारी से ल0 बनें। नारायण को जरूर लक्ष्मी भी चाहिए। अकेला तो नहीं होगा ना। यह डिनायस्टी स्थापन हो रही है। अनेक वार राजाई पाई है जब समझते भी हो तो फिर बादशाही प्राप्त करो ना। वन्डर भी देखा कितना है। तुम अपने तन-मन-धन से सभी कुछ कर रहे हो। लड़ाई आद की कोई बात ही नहीं। योगबल से तुम अपनी राजाई लेते हो। विनाश भी कैसे होगा। विनाश भी के यह तुम जान गये हो। यवनों और हिन्दुओं की लड़ाई है। वह लड़ाई नहीं। बम फेंका और मरा। उनको लड़ाई नहीं कहेंगे। तुम राज्य लेते हो बिगड़ी लड़ाई। विनाश भी होता है बिगड़ लड़ाई। यह तोपें आद पिछाड़ी में काम नहीं आवेंगे। उनकी कुछ वेल्यु ही नहीं रहेंगी। बाप घड़ी2 यही समझाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। मन्मनाभव। इनका अर्थ कोई बता न सके। अच्छा ओम